भजन

रचयिता
श्री दीपनारायण महाप्रभुजी

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्ता
श्री श्यामसुन्दर भारती

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी

कर केवल निरवाला, गजानन कर केवल निरवाला।
शिवशंकर सुत कंवर लाडला, पारबती के लाला।1।

सहाय करो गुरुदेव गजानन, तुम हो दीनदयाला।
भ्रम मेट भव पार लगाओ, जग रही जोत ज्वाला।2।

शुद्ध स्वरूप आप अविनाशी, ब्रह्ममूर्ति वाला।
गुणातीत निजानन्द स्वामी, जुग से रहत निराला।3।

श्री देवपुरी पूरा गुरु मेरा, अमृत पाया प्याला।
स्वामी दीप दीदार तुम्हारा, चेतन का उजियाला।4।

भजन में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ – words used in the bhajan

1- कर-कीजिये, do; केवल-(कैवल्य) मोक्ष, मुक्ति, freedom; निरवाला-(निरवाळा) निर्वाळा निवृत्त, विरक्त, free from attachment; गजानन- गणपति (रिद्धि-सिद्धि के देव), Ganesh; शिवशंकर - भगवान शंकर, महादेव, Lord Shiva; सुत- पुत्र, son; कंवर- पुत्र, kumar, son; लाडला- प्रिय, dear, beloved; पारवती- गजाननजी की माता, Parvati; लाला(लाल)- पुत्र, son।

2- सहाय- सहायता, help; करो- कीजिये, do; गुरु-आचार्य, मंत्र देने वाला, पूज्य, guru, teacher; देव- देवता, dieties; Gurudev-honorary title of guru; तुम- आप, you; हो- हैं, are; दीनदयाला- दीनों पर दया करने वाले, merciful to miserable ones; भ्रम- संदेह, ignorance; मेट- मिटाकर, remove; भव- संसार सागर, world; पार- उस पार, मुक्ति, across, on the other side; लगाओ – लाना, bring; जग रही- जल रही है, burning; जोत- ज्योति, light; ज्वाला- अग्नि, fire।

3- शुद्ध- विकार रहित, pure; स्वरूप- स्व-रूप, निज रूप, स्वभाव, form, own form, atma; आप- प्रभु के लिए संबोधन, you, God, guru; अविनाशी- जिसका नाश न हो, ईश्वर, indestructible; ब्रह्म- सच्चिदानन्द स्वरूप, जगत् का मूल तत्व, Brahman, formless God, Absolute; (ब्रह्म) मूर्तिवाला, सत्य स्वरूपा, form of the Absolute; गुणातीत- निर्गुण, without qualities (rajas, tamas, sattva); निजानन्द- निज में आनन्दित, blissful, happy within oneself; स्वामी- प्रभु, Lord, God, guru; जुग – जगत्, संसार, world (Marwari); रहत- रहता है, lives, exists; निराला- अद्भुत्, unique, amazing।

4- श्री देवपुरी- गुरु नाम की छाप, Sri Devpuriji; पूरा- पूर्ण, complete one; गुरु- मार्ग दर्शक, ज्ञानदाता, guru, one who shows the path, teacher; अमृत- ज्ञानामृत, nectar of knowledge; पाया- पिलाया, got, drank; प्याला- ज्ञान का प्याला, glass; स्वामी दीप- दीप स्वामीजी, Mahaprabhuji; दीदार- दर्शन, darshan, to see, to meet; चेतन- चेतना, जागृति, consciousness; उजियाला- प्रकाश, light।

सरलार्थ- Simple meaning

1- सर्व प्रथम सुमंगल के देव श्री गणेशजी से निवेदन किया गया है कि हे देव गजाननजी, हमें मोक्ष देकर निवृत्त कीजिये। हे भगवान शंकर के प्रिय पुत्र, हे पारवती के लाल, हमें मोक्ष प्रदान कीजिये।

In the beginning, Ganeshji was requested to give us moksha, liberation and free us of all attachments. Oh, son of Lord Shiva, Parvati's dear boy.

2- हे गजानन गुरुदेव महाराज, आप दीनों पर दया करने वाले हैं। हम सब भ्रममय जीवन जी रहे हैं, आप हमारे भ्रम का निवारण कर इस भवसागर से पार लगाओ, हमारे अंतर में ज्वाला जल रही है।
Oh Gurudev, you are Gajananda, you are merciful to the wretched, distressed ones. Our life is spent in ignorance, please remove this ignorance and bring us across the

ocean of the World. Light the flame in us.

3- हे महाराज, आप शुद्धस्वरूपा अविनाशी हैं, आप ब्रह्ममूर्ति हैं, आप गुणातीत निजानन्द स्वामी हैं, आप इस युग से विरल रहते हैं।

Oh, Maharaj Devpuriji, you are the pure indestructible form, you are the embodiment of the formless Absolute. You are swami, master of self, blissful in yourself, above all qualities (sattva, rajas and tamas). You live detached in this world.

4- स्वामी दीपपुरीजी कहते हैं कि श्री देवपुरीजी मेरे पूर्ण गुरु हैं, उन्होंने ही मुझे ज्ञान रूपी अमृत का पान कराया है। हे स्वामी, आपका दर्शन वास्तव में ही दिव्य का प्रकाश है।

Mahaprabhuji says that his guru Sri Devpuriji is complete. He gave him real knowledge. Oh, Swami, to see you is to see the Light!

भजन की व्याख्या - Commentary

सनातन (हिन्दू) धर्म में गणपति सिद्धि प्रदाता देव हैं। वे बुद्धि के अधिष्ठाता हैं। वे चतुर्दिशाओं के शुद्धि कारक हैं। वे सदैव शप्रतिशत सफलता के कारण हैं। इसीलिए किसी भी कार्य को करने से पूर्व मंगलमूर्ति भगवान श्री गणेशजी का आह्वान किया जाता है। गजाननजी को प्रसन्न करने के लिए सर्वप्रथम उन्हीं की प्रार्थना की जाती है। इसी सनातन विश्वास परम्परा के आधार पर ही परमश्रद्धेय पूजनीय स्वामी दीपपुरीजी महाराज ने अपने भजनों की भक्ति-सरिता बहाने से पूर्व भगवान श्री गणेशजी का आह्वान किया है और विनत भाव से सविनय प्रार्थना करते हुए निवेदन करते हैं, कि:-

In Hinduism Ganapati or Lord Ganesha is the giver of success. He is the lord of wisdom. He purifies all four directions. He is the cause of 100% success in every endeavour. That's why Lord Shri Ganesha is invoked before starting any work. To please Gajanand ji, his prayer is first offered. Based on this ancient tradition, the venerable Swami Dipapuriji Maharaj invoked Lord Shri Ganesha before offering the devotional

hymns. He humbly prays and requests that:

1- हे रिद्धि-सिद्धि के देवनहार गजाननजी महाराज, मुझे 'केवल' अर्थात् अकेला, पवित्र, उत्तम, संपूर्ण कर दीजिये। लेकिन यह तो भजन की पंक्तियों का शाब्दिक अर्थ है। निश्चित ही संत की 'कर केवल' प्रार्थना का इतना भर अभीष्ट नहीं हो सकता। क्या कोई संत केवल निजता, उत्तमता या संपूर्णता की ही कामना कर सकता है? संभवतः नहीं, फिर केवल का अभिप्राय क्या है ? वास्तव में देशज अर्थ में प्रयुक्त 'केवल' वास्तव में 'कैवल्य' के अभिप्राय के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, जिसका अन्तर्निहित आशय है निर्लिप्तता, एकत्व, मुक्ति, मोक्ष, ब्रह्मभाव की संप्राप्ति। अस्तु इसीलिए संत ने 'केवल' के साथ 'निरवाला' शब्द का उपयोग किया है। निरवाला शब्द राजस्थानी के 'निरवाळा' के आशय को लक्षित करता है, जिसका अर्थ होता है, निवृत्त होना, मुक्त होना। स्मरण रहे, यह 'निवृत्ति' संसारियों के 'प्रवृत्ति' भाव से एकदम विपरीत है। 'प्रवृत्ति' राग है, और 'निवृत्ति' विराग है। इसलिए निरवाळा होने की प्रार्थना संसार के 'रागात्मक' संबंधों से मुक्त होने की प्रार्थना है। स्वामी दीपपुरीजी महाराज भगवान शंकर के प्रिय पुत्र और मां पार्वती के लाल श्रीगजाननजी भगवान से यही प्रार्थना, यही अनुनय-विनय कर रहे हैं कि हे देव, 'कैवल्य' देकर मुझे सांसारिक प्रवृत्तियों से मुक्त कर दीजिये। यहाँ यह भी जानना प्रासंगिक है, कि वास्तव में 'कैवल्य' या 'मोक्ष' है क्या ? और सभी संत अंततः मोक्ष की कामना ही क्यों किया करते हैं ? सनातन में ऐसी मान्यता है, कि मोक्ष का अभिप्राय 'जन्म' और 'मरण' के बंधन से मुक्ति है। मोक्ष-कामना सत्य से साक्षात् सम्बन्ध की द्योतक है। अज्ञान के कारण ही 'जीवात्मा' को 'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनम्' के वर्तुल में युगों-युगों चक्कर लगाने पड़ते हैं, और चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है। लेकिन जो मोक्ष को प्राप्त हो जाता है, वह इन सारे बंधनों से मुक्त, अर्थात् 'केवल निरवाळा' हो जाता है। फिर वह 'जीवात्मा' जन्म और मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है। संतों-ज्ञानियों की भाषा में यही 'निरवाळा' भाव है, यही 'मोक्ष' है। ज्ञातव्य यह भी, कि जैसा कि साधारण जन समझते हैं कि मृत्यु मोक्ष है, लेकिन यह सत्य नहीं है। योग-दर्शन के अनुसार यह ज्ञान हो जाना, यह जान लेना कि 'कैवल्य' क्या है, यह कैवल्य भाव को समझ लेना ही मोक्ष है, न कि जीवन से मुक्ति। कैवल्य का अभिप्राय समाधि की चरम अवस्था है। साधारणतः निर्वाण और मोक्ष इसके पर्याय के रूप में प्रयुक्त किये जा सकते हैं। यही ब्रह्मत्व है। इसी लिए कैवल्य स्थिति तक पहुँचे हुए उत्कृष्ट संतों को ब्रह्मऋषि भी कहा जाता है।

Oh, Gajanandji Maharaj, the Lord of prosperity and success, make me 'keval' which means alone, pure, excellent, complete. This is the literal meaning of the lines of

this hymn. Surely a saint cannot have such a strong desire for solitude, excellence, or completeness. Probably not! Then what does 'keval, only' mean? The word 'only' used in the sense of 'Kaivalya' in the philosophical context means attainment of detachment, unity, liberation, salvation, and realization of Brahman. Therefore, the saint has used the word 'Nirvala' with 'Keval'. The word 'Nirvala' reflects the meaning of Rajasthan's 'Nirvalla', which means to retire or to be free. Remember that 'Nivritti or Nirvala', detachment is the opposite of worldly 'Pravritti', attachment. Swami Deepapuriji Maharaj is praying to Lord Shankar's and Parvati's dear son, Shri Gajanandji that Oh God, give me 'Kaivalya' and free me from worldly tendencies. Here it is also relevant to know what is 'Kaivalya' or 'Moksha'? And why do all saints ultimately desire liberation? In Sanatan Dharma it is believed that liberation is freedom from the bondage of birth and death. The desire for liberation is a real measure of truth. It is only due to ignorance that the 'jivatma', soul has to go round and round in the cycle of birth and death and wander in 8.4 million forms. But whoever attains liberation becomes free from all these bonds, that is, becomes 'Keval Niravala'. The one is then free from the bondage of reincarnation. In the language of saints and wise ones, this is 'Nirvala', this is 'Moksha'. It should also be known that common people think that death is Moksha, liberation, but this is not true. According to Yoga Darshana, only the knowledge of Kaivalya itself is freedom, dying has nothing to do with it. In this sense Nirvana and Moksha are synonyms. Therefore, those who can guide others to reach this state of Kaivalya are called Brahma rishis.

2- द्वितीय पद में वे कहते हैं कि हे गजाननजी महाराज, सांसारिक प्रवृत्तियों से मुक्त होने और निवृत्ति भाव को प्राप्त करने में आप मेरी सहायता कीजिये। यहाँ सहायता का अर्थ है, साधक को मोह-माया से मुक्त होने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करना। वास्तव में तो बहुत कठिन है संसार की रागात्मक वृत्ति से छूट पाना। संसार-सागर वह कीचड़ है जिससे जितना उभरने की, मुक्त होने की कोशिश करें, पाँव उतने ही गहरे दल-दल में धँसते चले जाते हैं।

कहीं धरातल नहीं मिलता। लेकिन ईशानुकम्पा से यह संभव है। इसलिए साधक निवेदन करता है कि हे देव, आप दीनदयाल, अर्थात् सामर्थ्यहीनों पर दया करने वाले हैं। वास्तव में मेरी ऐसी स्थिति इसलिए है कि मैं भ्रमित हूँ। अर्थात् मैं नहीं जानता कि प्रवृत्ति और निवृत्ति में क्या अन्तर है, और दोनों में क्या उचित और अनुचित है ? मेरे भीतर कामनाओं और वासनाओं की अग्नि निरन्तर धधक रही है, जो इतनी दाहक है कि मेरा अन्तर उस ज्वाला में प्रतिक्षण दहक रहा है। इससे मुक्त होने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। मैं नहीं जानता कि इससे मुक्ति का उपाय क्या है? यह भीतरी हाहाकार, यह अग्नि केवल और केवल आपकी कृपा से, मुझे इन जंजालों से मुक्ति मिलने पर ही शान्त हो सकती है। यह केवल और केवल आपकी सहायता से ही संभव है। इसलिए मेरी 'सहाय करो गुरुदेव गजानन्द।' स्मरण रहे साधक ने जिस भ्रम की बात कही है, वास्तव में वह भ्रम है क्या ? दरअसल वह भ्रम है संसार को अपना समझना। इस नाशवान् शरीर को अपना समझना। मित्रों-परिजनों को अपना समझना। धन-दौलत को अपना समझना। ...और जो कुछ करगत है, उपलब्ध है, उसे अपना समझना।...और जो नहीं है, उसे प्राप्त करने की लालसा रखना और उसके पीछे पागल की तरह दौड़ना। यह चाहना, यह लालसा ही प्रत्येक के भीतर 'जोत ज्वाला' बन कर निरन्तर अहर्निश 'जग' रही है। इसलिए हे सिद्धि के दाता गजाननजी महाराज, आप मेरा यह भ्रम मिटा कर मुझे इस 'भव' से अर्थात् संसार-सागर से पार उतारिये भीतर जग रही ज्वाला का प्रशमन कीजिये।

In the second verse, Mahaprabhuji requests Gajanandji Maharaj to help him in getting free from worldly tendencies and attain a state of detachment. Here the meaning of help is to provide the seeker with the power and ability to get free from delusion. It is very difficult to get rid of the worldly attachment. This ocean of the world is like mud from which the more you try to rise and get free, the more your sink in. There is no support anywhere. But this freedom is possible with God's compassion. Therefore, the seeker requests: “Oh, God, you are kind to the helpless, you are merciful to the powerless. I am confused. I do not know what the difference between attachment and detachment is, and what is right and wrong in both! The fires of desires and cravings are constantly burning inside me, which are burning so hot that even my inner self burns in it every moment. I am not capable to free myself. I do not know the techniques for liberation. This fire can only

be calmed by your grace when I am liberated from these entanglements. This is possible only with your help. Therefore, I request you to help me oh, Gurudev Gajananda." What is the delusion that the seeker has mentioned previously? That delusion is to look upon the world as one's own. To believe that this perishable body is one's own. To consider friends and relatives as one's own. To consider whatever one has as one's own; be greedy for things one does not have, and desperately trying to get them.

Therefore, the longing to become 'jot jwala', free is continuously 'awakening' within each one of us. That's why O Gajanandji Maharaj, the bestower of success, remove this illusion of mine and take me across this ocean of world and pacify the flame burning inside.

3- आगे साधक गजानन्दजी महाराज से विनती करते हुए कहते हैं कि हे भगवन्, आप शुद्ध स्वरूप हैं। शुद्ध स्वरूप अर्थात् विकाररहित निजस्वरूप, निजस्वभाव में स्थित हैं। यहाँ भगवान के निजस्वभाव पर विचार करना चाहिए। ज्ञातव्य है, कि किसी भी कार्य हेतु प्रथम स्मरण किये जाने वाले निजस्वभाववश सदैव केवल और केवल सिद्धि और समृद्धि प्रदान करना ही जिनका स्वभाव हो, वह प्रभु 'केवल' और केवल आप हैं। और इसलिए आप 'अविनाशी' अर्थात् नाशरहित हैं, क्योंकि साधक के आत्म-चित्त में आपका वास सदैव है, चिरन्तन है...और आत्मा नाशरहित है, अजर है, अमर है। इसलिए आप अविनाशी हैं, ब्रह्मस्वरूप हैं। ब्रह्मस्वरूप अर्थात् सच्चिदानन्द स्वरूप, जो जगत् का कारक है, मूल स्वरूप है। वह तत्व, जो सदैव था, है और रहेगा, जो सर्वकालिक है, सत्यस्वरूप है। इसलिए आप गुणातीत, अर्थात् तीनों गुणों से परे यानी रज, सत और तम से निस्पृह, निर्लेप हैं, निर्गुण हैं। क्या हैं ये तीन गुण ? कहते हैं सृष्टि की रचना रज, सत् और तम से हुई है। ज्ञातव्य है कि तीनों घटक सभी स्थूल-सूक्ष्म जीवों में विद्यमान होते हैं। जीवन में विकारों का संचरण उतार-चढ़ाव वास्तव में इन तीन गुणों के प्रभाव से ही होता है। साधारणतः इनसे निस्पृह-निर्लेप रहना कठिन होता है। भगवद् साधना-आराधना से ही इन पर नियंत्रण कर इनका शमन-दमन किया जा सकता है। गजानन्द देव चूँकि स्वयं गुणातीत हैं, इसलिए साधक स्वामी मंगलदायक प्रभु से सुमंगल की प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे देव, आप जग से निराले हैं, अर्थात् अद्भुत हैं, क्यों कि आप 'निजानन्द' हैं, निज में निमग्न आनन्दित रहने वाले हैं। स्मरण रहे, निजानन्द वह है, जो केवल और केवल

स्वयं में स्थित है। वही निर्लेप है, निस्पृह है, वही निर्गुण है। वही गुणातीत है। वही जुग (युग) से रहित है, अर्थात् निराला है...और इसलिए वही मुक्ति-प्रदाता देव है।

The practitioner, poet requests further and says O Lord Gajananda, you are pure in form. Pure form means that you are in your form without distortion, in your nature. Here we should pause and think about the Lord's nature. It is known that Gajananda is always remembered first for any work, and he provides success and prosperity. This success and prosperity are his nature. And he is the Lord for this reason. And that is why you are 'immortal', meaning that you are free from destruction, because your residence is always in the self-consciousness of the seeker, it is eternal…and the soul is immortal, indestructible, imperishable. Therefore, you are immortal, Brahma Swaroopa. Brahma Swaroopa means true blissful form, which is the cause of the world, the original form. That element, which was always there, is and will remain, which is eternal, true form. Therefore, you are beyond qualities, i.e., beyond all three qualities, i.e., Rajas, Sattva, and Tamas; you are unattached, unblemished and beyond qualities. What are these three qualities? It is said that the creation of the universe has been done by Rajas, Sattva, and Tamas. It is known that all three components are present in all gross and subtle beings. The circulation of distortions in life occurs due to the influence of these three qualities. Generally, it is difficult to remain unattached and unblemished from them. But they can be controlled by Sadhana, practice and Aradhana, prayers to God. Since Gajananda himself is beyond qualities, therefore the seeker prays to Lord Mangaldayak, Giver of Prosperity with good wishes saying that O Lord, you are unique from the world because you are 'Nijanand', i.e., happy in your self-consciousness. Remember that Nijanand is he who is always within himself. He alone is unblemished, unattached; he alone is beyond qualities; he alone is free from age (yuga), i.e., unique…and therefore he alone is the giver

of liberation.

4 प्रस्तुत भजन रचयिता पूज्य स्वामी दीपपुरीजी महाराज श्रीगणेशजी के आह्वान में अपने पूज्य गुरुदेव का स्मरण आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं, कि श्री देवपुरीजी महाराज मेरे पूर्ण गुरु हैं। पूर्ण गुरु से यहाँ अभिप्राय है, गुरुदेव, मार्ग-दर्शक, सचेतक, मंत्र-प्रदाता, ज्ञानदाता और अज्ञानरूपी तम को हरने वाला, और आपने ही मुझे 'अमृत-प्याला' पिलाया है, इसलिए आप ही मुझमें चेतना जाग्रत करने वाले उद्धारक देव हैं। यहाँ समझने की बात यह है, कि अमृत-प्याला क्या है? ज्ञातव्य है कि साधारणतः हमारी आत्मा या चेतना प्रायः सुप्तावस्था में अवस्थित रहती है, और यह एक नहीं, दो नहीं, वरन् जन्मों-जन्मों, युगों-युगों की सुप्तावस्था है। दुविधा यह है, कि हम इस नींद से अनभिज्ञ ही रहते हैं। उम्र बीत जाती है, जन्म बीत जाते हैं, युग बीत जाते हैं, और हम इस नींद से अनभिज्ञ ही रहते हैं।...और हमारी यह तन्द्रा...यह मोह निद्रा कभी टूटती नहीं है। फिर कभी युगों में जाकर कभी किसी चैतन्य सद्गुरु की कृपा होती है, जिससे हमारी चेतना को जागरण का सौभाग्य मिलता है, और उनकी अमृतवाणी से, उनके आशीर्वाद से हमारी चेतना को जागरण का आभास होता है। चैतन्य गुरु के दर्शन से ही, उनकी कृपा, उनके आशीर्वाद से ही हमें आत्मा का बोध होता है, जागरण का आभास होता है, और गुरु के आशीर्वाद से, गुरु के वचनामृत से ही हमारा आत्म-चैतन्य का मार्ग प्रशस्त होता है...और यह संभव होता है, किसी पूर्ण गुरु की कृपा से...उनके आशीर्वाद से...तो स्वामी दीपपुरीजी महाराज के वचन हैं कि देवपुरीजी मेरे पूर्ण गुरु हैं, देव स्वरूप हैं, जिनकी अलौकिक आभा से मेरे आत्मा के चतुर्दिक चैतन्य का संचरण हुआ है, और यह सब गुरुदेव की कृपा से ही संभव हुआ है।

The composer of this bhajan, revered Swami Deepapuriji Maharaj, expresses his gratitude to his revered Gurudev by remembering Shri Ganeshji in his invocation and says that Shri Devpuriji Maharaj is my complete Guru. The meaning of complete Guru here is that Gurudev is the guide, the awakener, the mantra-giver, the knowledge-giver and the one who removes ignorance in the form of darkness. You have made me drink the cup of nectar; therefore, you are the one who awakened consciousness in me, you are that liberating God Gajananda. What does 'the cup of nectar' mean here? It is known that generally our soul or consciousness remains in a state of sleep, and not only for one or two

but for many births and many ages. The problem is that we remain unaware of this sleep. Life passes by, births pass by, ages pass by, and we remain unaware of this sleep, so this delusion never breaks. Then sometimes in ages, by the grace of some self-realised Sadguru, our consciousness gets the fortune of awakening, and we get a glimpse of awakening from their words and their blessings which are like nectar. Only by seeing the self-realised Guru, by their grace, by their blessings, we get the knowledge of the soul, we get a glimpse of awakening, and by the blessings of the Guru, by their words our path to self-consciousness becomes clear. This is possible only by the grace of a complete Guru, by their blessings. Therefore, Swami Deepapuriji Maharaj's words are that Devpuriji is my complete Guru, he is God in form, whose divine radiance has spread consciousness in all directions of my soul, and all this has been possible only by his grace.